पर्यावरणीय शिक्षा के उद्देश्य
(Aims of Environmental Education)

सन् 1975 में बेलग्रेड में अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में निर्णय किया गया कि विश्व के सभी देशों के लिए समान व्यापक रूप से पर्यावरण शिक्षा के लिए वस्तुनिष्ठ उद्देश्य स्वीकार किये जाने चाहिएँ, जो अत्यन्त व्यावहारिक हों और सम्पूर्ण पर्यावरणीय समस्याओं को आत्मसात् कर सकें। पर्यावरण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. पर्यावरण के प्रति जागरुकता (Awarencess of Environment)—सम्पूर्ण पर्यावरण और उससे सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरुकता और संवेदनशीलता देने में सहायक है।

2. पर्यावरण के प्रति ज्ञान (Knowledge of Environment)—सम्पूर्ण पर्यावरण और उससे सम्बन्धित समस्याओं की आधारभूत समझ प्राप्त करने तथा उसमें मनुष्य की जिम्मेदारी की भूमिका निभाने में सहायक हो।

3. पर्यावरण के लिए अभिवृत्ति (Attitude towards Environment)—पर्यावरण के प्रति चिन्ता करके सामाजिक दायित्व निभाना तथा उसकी सुरक्षा और सुधार लाने के लिए किये जा रहे कार्यों में सहयोग देना।

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner

4. पर्यावरण के प्रति कौशल (Skills for Environment)—पर्यावरणीय समस्याओं के हल खोजने में कुशलता प्राप्त करने में सहायक हो।

5. सहभागिता (Participation)—पर्यावरणीय समस्याओं तथा समस्या-समाधान की विधियाँ निकालने की सहभागिता।

6. मूल्यांकन कुशलता (Evuluation Ability)—पर्यावरणीय उपाय तथा शैक्षिक कार्यक्रमों के पारिस्थितिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सौन्दर्यपरक और शैक्षिक घटकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करने में सहायक हो।

उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर ही विश्व के अलग-अलग देशों में स्थानीय परिवेश के आधार पर उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है।

भौतिक एवं जैविक पर्यावरणीय उद्देश्य
(Physical and Biotic Environmental Aims)

विषय को पढ़ने से पूर्व उसकी उपादेयता तथा महत्त्व के बारे में जाना जाता है, पुन: उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य का निर्धारण किया जाता है, ताकि उन सभी क्षेत्रों में विकास किया जा सके। उसके अनुरूप ही पाठ्य-वस्तु का निर्माण एवं पाठ्य-योजना का निर्माण तथा सम्प्रेषण होता है। इसके महत्त्व एवं उपयोगिता प्रत्येक स्तर पर अलग-अलग हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए भौतिक एवं जैविक शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं—

1. वैज्ञानिक तथ्यों की जानकारी (Knowledge of Scienfic Facts)—भौतिक एवं जैविक पर्यावरण शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य छात्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना होता है। किसी भी तथ्य को समझने के लिए छात्र में चिन्तन, सोचने-विचारने की शक्ति या निरीक्षण शक्ति का विकास करना वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण किसी नियम को परीक्षण किये बिना नहीं मानता, वह तथ्यों की गहरायी में जाता है तथा नवीन वस्तुओं को खोजने के लिए जिज्ञासु भाव बनाये रखता है।

2. अनुशासनात्मक उद्देश्य (Disciplinary Aim)—भौतिक एवं जैविक पर्यावरण शिक्षण द्वारा छात्र के मन एवं मस्तिष्क में अनुशासन स्थापित किया जाता है। इससे छात्र द्वारा प्रत्येक कार्य पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण लिये हुए होता है।

छात्र किसी घटना पर अवलोकन कर प्रयोग करके निष्कर्ष निकलता है, इससे उसमें अन्धविश्वास नाम की कोई चीज ही नहीं रहती तथा जिज्ञासा, आत्म-दृढ़ता एवं आत्म-विश्वास जैसे स्वस्थ गुणों का प्रादुर्भाव होता है।

3. प्रयोग-सम्बन्धी कौशल उत्पन्न करना (To Produce the Skill related to Experiments)—भौतिक एवं जैविक पर्यावरण के अनुशीलन द्वारा छात्र के पठन के साथ प्रायोगिक दृष्टिकोण विकास होना चाहिए, ताकि वह प्रयोग से सम्बन्धित सम्पूर्ण ज्ञान करके परीक्षण कर सके। उपकरण के प्रत्येक भाग का ज्ञान तथा उसके निर्माण का कार्य भी छात्र द्वारा सम्पन्न होना चाहिए।

4. व्यावहारिक उद्देश्य (Behavioural Aims)—ज्ञान का तभी मूल्य है, जब वह प्रायोगिक होता है। भौतिक एवं जैविक पर्यावरणीय शिक्षण द्वारा नये नियम एवं सूत्र तथा सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त होता है, साथ ही छात्र अपने समाज में, परिवेश में एवं अपने उन सिद्धान्तों का प्रयोग कर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है। यह व्यावहारिक ज्ञान भी होता है।

5. मनोवैज्ञानिक उद्देश्य (Psychological Aims)—भौतिक एवं जैविक पर्यावरणीय अध्ययन द्वारा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा उसकी रुचियों का विकास करने में सहायता मिलती है। छात्र में रचनात्मक प्रवृत्ति, संग्रह करने की रुचि तथा आत्माभिव्यक्ति आदि हृदय की मूल भावनाओं को सन्तुष्ट करने

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner

जैसा कार्य सम्पादित होता है। इससे छात्र सहज भाव से अपनी रुचि एवं स्वभाव के अनुरूप एक निश्चित दिशा में वृद्धि करता है।

6. जीवनोपयोगी उद्देश्य (Aims of Life related)—छात्र को अभिभावक इसलिये विद्यालय में भेजते हैं ताकि वह पढ़कर उसका उपयोग धनोपार्जन में करे। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है। अत: नयी शिक्षा पद्धति में (10 + 2 + 3) में + 2 पर व्यावसायिक शिक्षा का विकल्प रखा गया है। इस प्रकार उसे व्यवसाय भी मिल जाता है।

7. सामाजिक उद्देश्य (Social Aims)—भौतिक एवं जैविक पर्यावरणीय अध्ययन के द्वारा छात्र में सामाजिक गुणों का विकास होता है। वे इस औद्योगिक युग में अपने समाज को समझें तथा एक-दूसरे के काम आयें। ये वैज्ञानिक जानकारी समाज को उससे मिलती रहनी चाहिए। अच्छा नागरिक बनाने के लिए पर्यावरणीय अध्ययन का शिक्षण आवश्यक है, जिससे व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र सुखी रह सकें।

8. सांस्कृतिक उद्देश्य (Cultural Aims)—देश की सभ्यता एवं संस्कृति का विकास पर्यावरण विज्ञान द्वारा ही हुआ है। इसका प्रभाव उस पर पड़े बिना नहीं रह सकता। मानव की भाँति संस्कृति को विज्ञान द्वारा कैसे अक्षुण्ण एवं विकसित किया जा सकता है, ऐसा विज्ञान के इतिहास एवं साहित्य के अनुशीलन द्वारा छात्र कर सकता है।

9. अन्य विषयों के अध्ययन में सहायक (Helpuful in the Study of Other Subjects)—छात्र को पढ़ाये जाने वाले विषयों के उपयोगी होने में पर्यावरण विज्ञान शिक्षण आवश्यक है। एक विषय का ज्ञान दूसरे में कहाँ तक प्रयोग किया जाना चाहिए तथा वह कैसे उपयोगी हो सकता है, यह सोचना चाहिए?

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner